International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 08-11
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 18-09-2014
Accepted: 07-10-2014

Dr. Nandan Kumar Tiwari
Academic Associate, Dept. of Jyotish, Uttarakhand Open University, Teen pani bypass road, Haldwani, Nainital.

Correspondence
Nandan Kumar Tiwari
Academic Associate, Dept. of Jyotish, Uttarakhand Open University, Teen pani bypass road, Haldwani, Nainital.

ज्योतिष में यात्रा विमर्श

Jyotish Mein Yatra Wimarsh

Nandan Kumar Tiwari

सारांशिका
ज्योतिष शास्त्र अनादि काल से ही अपनी ज्ञानरूपी प्रकाशपुंज से समस्त चराचर प्राणियों को प्रकाशमान करता रहा है । जगत् के किसी भी क्षेत्र में यह अपना अधिकार रखता है । इस लेख में यात्रा को केन्द्रित कर उसका ज्योतिषीय विवेचन किया गया है । मानव अपने सम्पूर्ण जीवन काल में विभिन्न प्रयोजनवशात् यात्रा करता है । ऋषियों ने मानव जीवन में यात्रा के महत्व को देखते हुये ज्योतिष शास्त्र में स्वतन्त्र रूप से 'यात्रा प्रकरण' को ही प्रतिपादित कर दिया है । यात्राजन्य विभिन्न प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि ज्योतिष शास्त्र से किस प्रकार की जा सकती है, इसका विवेचन इस लेख में द्रष्टव्य है ।

कूटशब्दः अन्तर्निहित, अक्षुण्ण, सैद्धान्तिक, परवर्ती, मर्मस्पर्शी, रसाभास, दशार्णेश, प्रभातकालीन ।

प्रस्तावना
'यात्रा' मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक मानव अपने सम्पूर्ण जीवन काल में विभिन्न उद्देश्यों से कई बार यात्रा करता है । सामान्य तौर पर यात्रा का अभिप्राय किसी विशेष उद्देश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान में प्रस्थान; जाने से है । यात्रा प्रमुख रूप से दो प्रकार की होती है – 1. सामान्य 2. विजय परक । जन सामान्य के व्यवहार हेतु विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिये की जानेवाली यात्रा सामान्य यात्रा होती है। किसी राज्य पर विजय प्राप्ति के उद्देश्य से अथवा किसी शत्रु के दमन के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा ''विजय यात्रा'' होती है । यह विशेष रूप से राजाओं या राजपुरूषों के लिये होती है ।

परविषये विजयार्थं गन्तुर्यात्रा तु समरविजयाख्या ।
निखिला परयात्रा या सामान्या सा भवेद्द्विधा ।।

सामान्य यात्रा का विचार जन साधारण के लिये ही किया जाता है, परन्तु ज्योतिष में विजय परक यात्रा मुहूर्त्त प्रायः राजा को ही उद्देश्य करके लिखे गये है। प्रस्तुत लेख में ज्योतिषोक्त यात्रा का विवेचन किया गया है ।
यात्रा का सम्बन्ध सर्वप्रथम दिशाओं से है । किसी व्यक्ति को किस दिशा में यात्रा करनी है इसके लिये सर्वप्रथम दिशाओं का ज्ञान आवश्यक है । यथा –

भास्कराभिसुखैर्ज्ञेया दिशोऽथ विदिशः स्फुटाः ।
सम्मुखे पूर्वदिग् ज्ञेया पश्चाज्ज्ञेया च पश्चिमा ।।
उत्तरा वामभागे या दक्षिणे सा च दक्षिणा ।
अग्निकोणस्तथाग्नेयी पूर्वदक्षिणमध्यगा ।।
नैऋतो निर्ऋतेः कोणो दक्षिणापरमध्यगा ।
पश्चिमोत्तरमध्यस्था वायवी वायुकोणकः ।।
ईशानकोण ऐशानी विदिक् पूर्वोत्तरान्तरे ।

पूर्व आदि चार दिशा और आग्नेय आदि चार विदिशा है, जहॉ प्रातःकाल सूर्योदय होता है वह पूर्व दिशा होता है । पूर्व की ओर मुख करके खड़े होने पर वाम भाग में उत्तर, दाहिनी ओर दक्षिण और पीछे पश्चिम दिशा होती है । पूर्व और दक्षिण के बीच के कोण को आग्नेय, दक्षिण और पश्चिम के मध्य कोण को नैर्ऋत्य, पश्चिम और उत्तर के मध्यकोण को वायव्य और उत्तर तथा पूर्व के मध्य कोण

को ईशान कोण कहते है । इन्हें विदिशा भी कहा जाता है । उर्ध्व और अधः को मिलाकर कुल दिशा एवं विदिशाओं की संख्या 10 होती है ।

सामान्य तौर पर किसी व्यक्ति को किस दिन और किस दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये इसके लिये ज्योतिष शास्त्र में आचार्यों ने **दिक्शूलविचार** का विवेचन इस प्रकार किया है –

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां हि दिशं गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ।।

अर्थात् शनिवार एवं सोमवार को पूर्व दिशा, वृहस्पति वार को दक्षिण दिशा, रविवार और शुक्र के दिन पश्चिम तथा बुध और मंगलवार को उत्तर दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये ।

ऐशान्यां ज्ञे शनौ शूलमाग्नेय्यां गुरूसोमयोः ।
वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैर्ऋत्यां सूर्यशुक्रयोः ।।

बुध और शनिवार के दिन ईशान कोण में, सोम और गुरूवार को आग्नेय कोण में, मंगलवार को वायव्य कोण में रवि और शुक्र को नैर्ऋत्य कोण में दिक्शूल रहता है । सम्मुख दिक्शूल गमन निषेध है ।

जिस दिन जिस दिशा में दिक्शूल हो उस दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये । ज्योतिष शास्त्र की परम्परा में आचार्यो ने जनमानस के लिये कारण के साथ निवारण का भी परिहार के रूप में निरूपण किया है।

दिक्शूल परिहार –

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ।
गुडमङ्गारवारे तु बुधवारे तिलानपि ।।
गुरूवारे दधि प्राश्य शुक्रवारे यवानपि ।
माषान्भुक्त्वा शनौ वारे शूलदोषोपशान्तये ।।

दिक्शूल में आवश्यक कार्यवश दोष की शान्ति के लिये रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगलवार को गुड़, बुधवार को तिल, वृहस्पतिवार को दधि, शुक्रवार को यव और शनिवार को उड़द भक्षण कर यात्रा करनी चाहिये ।

राशियों की दिशादि संज्ञा –

मेषे च सिंहे धनु इन्द्र भागे ।
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।।
युग्मे तुलायां च घटी प्रतीच्यां ।
कर्काऽलिमीने दिशि चोत्तरस्यां ।।

मेष, सिंह, धनु – पूर्व दिशा
वृष, कन्या, मकर – दक्षिण दिशा
मिथुन, तुला, कुम्भ – पश्चिम दिशा
कर्क, वृश्चिक, मीन – उत्तर दिशा ।

पूर्व दिशा के लिये मेष, सिंह, धनु दिग्द्वार राशियॉ है । इन्हीं राशियों में इन्हीं लग्नों में पूर्व दिशा में यात्रा करना शुभ होता है तथा इन्हीं राशि लग्नों में पश्चिम मे यात्रा करना अशुभ होता है । इसी प्रकार शेष दिशाओं में समझना चाहिये ।

यात्रा में चन्द्रमा का विचार अत्यावश्यक है । चन्द्रमा मेषादि राशियों के क्रम से घातक चन्द्रमा होता है । जैसे मेष को प्रथम, वृष को पंचम, मिथुन को नवम, कर्क को दूसरा, सिंह को छठा, कन्या को दसवॉ, तुला को तीसरा, वृश्चिक को सातवॉ, धनु को चौथा, मकर को आठवॉ, कुम्भ को ग्यारहवॉ और मीन को बारहवॉ चन्द्रमा घातक है ।

घातक चन्द्रमा फल –

रोगे मृत्यु रणे भंगो यात्राकाले च बन्धनम् ।
विवाहे विधवा नारी घातचन्द्रफलं स्मृतम् ।।

चन्द्र घात के दिन रोग हो तो मृत्यु, युद्ध करने से हार, यात्रा करने से बन्धन और विवाह करने से स्त्री विधवा होती है ।

यात्रा में भद्रा विचार –

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोकगता भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ।।

स्वर्ग में भद्रा हो तो शुभकार्य, पाताल में हो तो धन का लाभ और जो भद्रा मृत्युलोक में हो तो समस्त कार्य का नाश करती है ।

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च ह्यधोमुखी ।
उर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ।।

मृत्यु लोक की भद्रा सम्मुख, पाताल लोक की अधोमुखी और स्वर्ग की उर्ध्वमुखी होती है । सम्मुख भ्रदा मरण करती है ।

भद्रामुखेषु या याति कोशमेकं नरो यदि ।
पुनरागमनं नास्ति सागरात्सरितो यथा ।।

जो व्यक्ति भद्रा के सम्मुख एक कोश की भी यात्रा करता है वह पुनः लौटता नहीं है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार नदियॉ समुद्र में जाकर नहीं लौटती ।

नक्षत्रों के अनुसार यात्रा –

अनुराधश्रवो हस्तो मृश्चाश्वो द्वितीद्वयम् ।
धनिष्ठा रेवती चैव यात्रायां शुभदा सदा ।।
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमा
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ।।
लग्ने कन्या मन्मथश्च वृषभश्च तुलाधारः ।
यात्राचन्द्रबले लग्ने शकुनं च विचारयेत् ।।
सर्वदिग्गमने हस्तः पूषां च श्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यारम्भे गुरूर्यथा ।।

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती ये नक्षत्र फलयात्रा में उग्र है । उत्तराभाद्रपद, विशाखा और आश्लेषा ये नक्षत्र यात्रा में अशुभ है और अन्य नक्षत्र मध्यम है । षष्ठी, रिक्ता, 4,9,14 और पर्व दिन यात्रा में इनका परित्याग कर देना चाहिये । कन्या, मिथुन, वृष, तुला ये लग्न यात्रा में शुभ है। चन्द्रमा लग्न बल होने पर भी यात्रा शकुन विचार करना चाहिये । हस्त, रेवती, श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सर्वत्र सर्व दिशा की यात्रा में शुभ है । पुष्य नक्षत्र सर्व शुभ कार्यों में इस प्रकार सिद्धियों को देने वाली होती है, जैसे विद्या के आरम्भ में गुरू ।

यात्रा में वर्जित –

त्र्यहं क्षीरं च पंचांहं क्षौरं सप्तदिनं रतम् ।
वर्ज्यं यात्रादिनात् पूर्वमशक्तस्तद्दिने रतम् ।।

यात्रा करने से तीन दिन प्रथम दूध, पॉच दिन पहले और क्षौर, सात दिन पहले स्त्री – प्रसंग का त्याग करें और अशक्त हो तो केवल यात्रा के दिन ही त्याग करें ।

पिता और पुत्र को एक साथ नहीं जाना चाहिये, दो भ्राता, नव स्त्री, तीन ब्राह्मणों को एक साथ यात्रा नहीं करनी चाहिये ।

यात्रा में शुक्र फल –

दक्षिणेऽसुखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेदस्तगः शुभः ।।

यात्रा के समय शुक्र दक्षिण हो तो दुःख होता है, सम्मुख हो तो नेत्रों में विकार होता है, वाम और पीछे नित्य शुभ होता है तथा अस्ता हुआ शुक्र शुभ का अवरोध करता है ।

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधे च नैर्ऋते ।
याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ।।

रविवार को उत्तर, सोमवार को वायव्य, मंगल को पश्चिम, बुध को नैर्ऋत्य, गुरूवार को दक्षिण, शुक्र को अग्निकोण और शनिवार को पूर्व काल रहता है । उक्त वारों में तद् तद् दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये। यात्रा करनें से परिणाम मृत्युदायक होता है ।

मास और तिथि के अनुसार यात्रा फल –
पौष मास में प्रतिपदा से द्वादशी पर्यन्त 12 तिथियों में, माघादि मासों की द्वितीयादि 12 तिथियों में, पूर्वादि चारों दिशाओं में यात्रा का परिणाम इस प्रकार से है –

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आशि	का.	मा.	पूर्व	द.	प.	उ.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	सौख्य	क्लेश	भय	अर्थ लाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	शून्य	निर्धन	दरिद्र	मिश्रि.
3	4	5	6	7	8	9	10	10	12	1	2	अर्थ	दुःख	इष्ट लाभ	धन
4	5	6	7	8	9	10	11	11	1	2	3	लाभ	सुख	शुभ	धन लाभ
5	6	7	8	9	10	11	12	12	2	3	4	लाभ	धन.ला.	धन	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	1	3	4	5	भय	लाभ	मृत्यु	धन लाभ
7	8	9	10	11	12	1	2	2	4	5	6	लाभ	कष्ट	ध.ला.	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	3	5	6	7	कष्ट	सौ.	क्ले.	लाभ
9	10	11	12	1	2	3	4	4	6	7	8	सुख	लाभ	कार्य सिद्धि	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	5	7	8	9	कष्ट	कष्ट से सिद्धि	ध.ला.	धन
11	12	1	2	3	4	5	6	6	8	9	10	मृत्यु	लाभ	ध.ला	शून्य
12	1	2	3	4	5	6	7	7	9	10	11	शून्य	सुख	मृत्यु	कष्ट

वृष, कन्या और मीन राशि वालों के लिये पूर्णा 5,10,15 तिथियॉ, मिथुन, कर्क राशि वालों के लिये भद्रा 2,7,12 तिथियॉ, वृश्चिक और मेष राशि के लिये नन्दा 1,6,11 तिथियॉ, मकर और तुला के लिये रिक्ता 4,9,14 तिथियॉ, धनु, कुम्भ और सिंह राशि वालों के लिये जया 3,8,13 तिथियॉ घात संज्ञक होती है । ये घात तिथियॉ तत् – तत् राशि वालों के लिये यात्रा के लिये अशुभ होती है ।

मकर राशि के लिये मंगलवार, वृष – सिंह – कन्या राशियों के लिये शनिवार, मिथुन के लिये सोमवार, मेष राशि के लिये रविवार, कर्क राशि के लिये बुधवार, धनु – वृश्चिक और मीन राशि के लिये शुक्रवार तथा कुम्भ और तुला राशियों के लिये गुरूवार, घातवार होते है । ये शुभ नहीं होते ।
मेषादि राशियों में क्रम से मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, शतभिष, रेवती, भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, आश्लेषा, घात नक्षत्र होते है । अर्थात् मेष राशि वालों के लिये मघा, वृष के लिये हस्त, मिथुन के लिये स्वाती, कर्क के लिये अनुराधा, सिंह के लिये मूल, कन्या के लिये श्रवण, तुला के लिये शतभिष, वृश्चिक के लिये रेवती, धनु के लिये भरणी, मकर के लिये रोहिणी, कुम्भ के लिये आर्द्रा तथा मीन के लिये आश्लेषा नक्षत्र घात संज्ञक होते है । जो शुभ नहीं होते ।

सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही उत्तरायण हो तो उत्तर और पूर्व दिशा में यदि दोनों ही दक्षिण अयन में स्थित हों तो पश्चिम और दक्षिण दिशाओं में यात्रा करनी चाहिये । सूर्य और चन्द्रमा यदि भिन्न – भिन्न अयन में हो तो इनकी दिशाओं में क्रम से दिन और रात्रि में यात्रा करनी चाहिये ।अर्थात् सूर्य की अयन दिशा में दिन में तथा चन्द्रमा की अयन दिशा मे रात्रि में करनी चाहिये ।

यात्रा में समय बल –

उषः कालो विना पूर्वा गोधूलिः पश्चिमां विना ।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाऽभिजित् ।।

पूर्व दिशा को छोड़कर शेष सभी दिशाओं की यात्रा में उषाकाल शुभ होता है । पश्चिम दिशा को छोड़कर शेष दिशाओं में गोधूलि काल, उत्तर दिशा को छोड़कर शेष दिशाओं की यात्रा में अर्धरात्रि काल, दक्षिण दिशा को छोड़कर शेष दिशाओं की यात्रा में अभिजित् मुहूर्त्त शुभ होता है ।
यात्राकालिक लग्न से सप्तम भाव में चन्द्रमा, लग्न में सूर्य धन भाव में गुरू, शुक्र और बुध स्थित हों तो इस प्रकार के योग में यात्रा करने वाला शत्रुओं को उसी प्रकार जीतता है जैसे गरूड़ सर्पों को।

यात्रा में विजय योग

उदये रविर्यदि सौरिररिगः शशी दशमेऽपि ।
वसुधापतिर्यदि याति रिपुवाहिनी दशमेति ।।

लग्न में सूर्य, षष्ठ भाव में शनि, तथा दशम भाव में चन्द्रमा हो तो इस योग में यात्रा करने वाला राजा शत्रु सेना को अपने वश में कर लेता है । अर्थात् शत्रु सेना आत्म समर्पण कर देती है ।

तनौ शनिकुजौ रविर्दशनभे वृषो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे ।
त्रिलाभरिपुभेषु भूसुतशनी गुरूज्ञभृगुजास्तथा बलयुताः ।।

लग्न में शनि, मंगल, दशम भाव में सूर्य, ग्यारहवें या दशम भाव में बुध अथवा शुक्र स्थित हों तो विजय होती है । तृतीय – एकादश षष्ठ भावों

में भौम और शनि हों तथा गुरू – बुध और शुक्र बलवान हों तो यात्रा करने वाले की विजय होती है ।
लग्न में गुरू, सप्तम मे चन्द्र, चतुर्थ भाव में बुध – शुक्र तथा तृतीय भाव में दुष्टग्रह स्थित हों तो यात्रा करने वाले की विजय होती है ।

यात्रा में शकुन विचार –

चेतोनिमित्तशकुनैः खलु सुप्रशस्तै –
र्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति ।
सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेधात् ।।

मन की प्रसन्नता, अंगलक्षणादि शुभ निमित्तों तथा पशु – पक्षी एवं आकाश जन्य शुभ शकुनों के साथ – साथ लग्न के बल का ज्ञान

कर जो राजा प्रस्थान करता है उसकी अभीष्ट सिद्धि होती है । शकुन आदि की अपेक्षा मन की शुद्धि अधिक महत्वपूर्ण होती है । यदि यात्रा काल में मन की प्रसन्नता न हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिये ।

निष्कर्ष : – वर्तमान समय में आम जनमानस अपने आप में अत्यन्त व्यस्तता पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे है । आज बड़े – बड़े शहरों में लोगों के पास बिल्कुल समय नहीं होता है, फलस्वरूप वो यात्रा के दृष्टिकोण से कभी – भी यात्रा के लिये प्रवृत्त हो जाते है । जिसका परिणाम कभी – कभी दुष्कर हो जाता है । यात्रा जनित समस्या को ध्यान में रखते हुये ही ज्योतिष के आचार्यों ने प्राचीन समय में यात्रा प्रकरण का विवेचन किया है । ज्योतिष शास्त्र इस दिशा में यात्रा के लिये शुभ समय का बोध कराता है । यदि प्रत्येक मानव अपने जीवन में ज्योतिष के अनुसार यात्रादि कार्य करें तो निश्चय ही उसके जीवन में दुर्घटनाओं की सम्भावना कम हो जायेगी । जहॉ पर अत्यन्त आवश्यक हो वहॉ ज्योतिषोक्त परिहार करके यात्रा करनी चाहिये।

नित्यं ज्ञानं वितर भगवन् भूयसे मंगलाय ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि – रामदैवज्ञ
2. वृहदवकहड़ाचक्रम् – अवध बिहारी त्रिपाठी
3. वृहज्ज्योतिसार – वासुदेव गुप्त